आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2628 • उदयपुर, रविवार 06 मार्च, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

दृष्टिहीन मोहिनी की कहानी

मेरा नाम मोहनी है। गोगंदा पचायंत समिति के नाथथियाथ गांव मैं रहती हूं। मुझे बिल्कुल भी भी दिखाई नहीं देता ओर ना ही ठीक से चल सकती हूं। मेरे साथ एक बेटा और बेटी रहती है, 5–6 वर्ष पहले मुझे बुखार के साथ पीलियां भी हो गया था। जिसका प्रभाव मेरी आंखों पर पड़ा और धीरे–धीरे कम दिखाई देने लगा। अब मुझे बिल्कुल भी दिखाई नहीं देता। इलाज भी करवाया लेकिन फायदा नहीं हुआ, मेरी इस स्थिति को देखते हुए मेरे विकलांग पति (रामाराम) की मानसिक स्थिति खराब हो गई।

धीरे–धीरे वे भी अत्यधिक बीमार हो गये और एक वर्ष पहले उनकी मौत हो गई। घर की जरूरते बहुत मुश्किल से पूरी हो पाती हैं। आस–पास वाले भी मेरी मदद कर देते है। बेटी मेरे हर कदम पर साथ चलती है। मैं उसके सहारे अपने दैनंदिन काम कर पाती हूं। बेटा प्रकाश राजकोट में होटल पर काम करता है। उसे हर माह 5000 तनख्वाह मिलती है। इससे वह उसकी और हमारी जरूरतों का पूरा करता है। अभी हाल ही मे गांव में

नारायण सेवा संस्थान का कैंप लगा था जिसमें मुझे पूराराम जी (पूर्व सरपंच) लेकर गए और राशन व अन्य सामग्री का सहयोग दिलाया। लम्बे समय बाद जरूरत की चीजें पाकर खुशी हुई।

रागिनी में लौटा आत्मविश्वास

बिहार निवासी रागिनी के परिवार में माता–पिता सहित सात सदस्य हैं। वह नौंवी कक्षा में अध्ययनरत है। पिता कृष्णावतार फलों का ठेला लगाते हैं और बेमुश्किल आठ–नौ हजार रू. कमाते हैं। रागिनी जन्म के समय सामान्य बच्चों की तरह ही थी। जब वह करीब 13–14 की होगी तब उसके पांव में दर्द और टेढ़ेपन की समस्या आई। गरीब पिता ने आस पास के हॉस्पीटल में इलाज कराने की कोशिश भी की पर फायदा नहीं हुआ। उम्र के साथ रागिनी और उसके परिवार की दिक्कतें भी बढ़ती गई। उसका आत्म विश्वास भी कमजोर पड़ने लगा। पढ़ाई छोड़ने की नौबत तक आ गई। तभी उन्हें नारायण सेवा संस्थान की जानकारी मिली। पिता मालुमात कर बेटी को उदयपुर लेकर आए। संस्थान के वरिश्ठ ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. अंकित चौहान से उसका परीक्षण किया। उन्होंने बताया कि इलीजरॉव पद्धति से रागिनी का ऑपरेशन कर दिव्यांगता से छुटकारा दिला देंगे।

डॉक्टर की बातों पर पिता–पुत्री को एकाएक विश्वास नहीं हो रहा था। तब संस्थान टीम ने उनकी समझाईश की और रागिनी का सफल ऑपरेशन सम्पन्न हुआ। 3 माह तक डॉक्टर्स टीम की विशेश देखरेख में रागिनी को संस्थान में रखा गया। अब वह बिन सहारे चलती है..

.. बिल्कुल एक सकलांग की तरह। यह देख पूरा परिवार बेहद खुश है। रागिनी कहती है कि मैंने तो जीने की उम्मीद ही छोड़ दी थी लेकिन अब मुझे विश्वास है कि मेरा जीवन संस्थान की बदौलत खुशमय होगा।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल नि:शुल्क दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
दिनांक व स्थान

06 मार्च 2022 :ओली सीमेंट ऐजेन्सीज एण्ड बिल्डिंग मटेरियल मैन चौराया, कुटरा खटीया, उधमसिंहनगर, उत्तराखण्ड

06 मार्च 2022 : पारस मंगल कार्यालय, पारस नगर, शेदूर्णी ता. जामनेर , जलगांव महाराष्ट्र

06 मार्च 2022 : राम विष्णु सरस्वती शिशु मंदिर, चांदपुर चौराहा, नहटौर, बिजनौर, उ.प्र.

06 मार्च 2022 : गीता आश्रम, हनुमान चौराहा, जैसलमेर, राजस्थान

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

पुलिस कर्मी को लगा कृत्रिम पैर

मध्यप्रदेश के रतलाम निवासी 56 वर्षीय सहायक सब इंस्पेक्टर घटश्याम बियावट का 7 जून 2017 को सड़क दुर्घटना में मोटर साईकिल से गिरकर दाया पैर क्षतिग्रस्त हो गया। आस–पास के लोगों ने उसे रतलाम पहुंचाया, जहां पांव का लेगामेन्ट सही करने के लिए ऑपरेशन कर चढ़ा दिया गया। महीनों तक ईलाज चलता रहा ना तो दर्द से राहत मिनी न हड्डी जुड़ी। तब थक–हार परिवार वाले इंदौर के एक नामी हॉस्पहटल ले गए। वहां की चिकित्सा करने वाली डॉक्टर्स टीम ने पैर की नाजुक हालात देखकर कहा कि पांव जख्म में पस रूक नहीं रहा है। इन्हे गेगरीन हो गया है। पांव कांटना होगा। दिनांक 16 मार्च 2018 को घुटने के नीचे से दांया पाव काट दिया गया। देश समाज की सेवा में 24 घंटे तत्पर रहने वाले पुलिस कर्मी की जिन्दगी सहारे की मोहताज हो गई। एक पैर से ड्यूटी निभाना भी तकलीफ देह हो गया। कुछ दिन पूर्व एक व्यक्ति से उनका मिलना हुआ, उसने कहा कि मैंने उदयपुर नारायण सेवा संस्थान से कृत्रिम पैर लगवाया मुझे बहुत राहत मिली है। यह सुनते ही एएसआई घनश्याम में भी उम्मीद जगी और वे उदयपुर आ गए। संस्थान के डॉ. मानस रंजन साहू ने मेजरमेन्ठ लेकर मोड्युलर लिम्ब तैयार कर घनश्याम को पहनाया। उन्हें चलने की ट्रेनिंग दी गई। अब वे धीरे–धीरे बिन सहारे चलने लगे हैं। हल्का और किस्म का कृत्रिम पैर पाकर एएसआई घनश्याम व परिजन बेहद खुश हैं।

व्यक्ति निर्माण का उपक्रम

कुछ यात्री नौका से उतरे। उन्हें गांव पहुंचना था। एक व्यक्ति से पूछा– 'क्या सूरज के अस्त होते होते हम गांव में पहुंच जाएंगे?' उसने कहा– 'धीरे चलोगे तो पहुंच जाओगे, तेज चलोगे तो नहीं पहुंच पाओगे, बिल्कुल उल्टी बात थी। कुछ लोग तेज चलने लगे। भूमि ऊबड़–खाबड़ और पथरीली थी। वे एक एक कर गिर गिए। चोट लगी। वहीं रूक गए।

आज गति की इतनी तीव्रता हो गई है कि आदमी जल्दी पहुंचे, लेकिन कभी–कभी ऐसा होता है कि जल्दी पहुंचने वाला आदमी बीच में ही लड़खड़ा जाता है। जैसे–जैसे टेक्नोलोजी का विकास हो रहा है, वैसे–वैसे आदमी अनुभव कर रहा है कि उसे पीछे मुड़कर देखने की जरूरत हो गई है। वह समझता है कि आदमी बहुत आगे बढकर भी बहुत पिछड़ गया है। आज आदमी पिछड़ गया और 'रोबोट' आगे बढ़ गया, कंप्यूटर हावी हो गया। दूसरे शब्दों में आदमी पीछे रह गया और यंत्र आगे आ गया। यह गति की तीव्रता का परिणाम है।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

बाल्मीकि ऋषि को भगवान ने पूछा– प्रभु आप तो बहुत ज्ञानी हैं। तपस्वी हैं, ब्रह्मस्वी हैं। आप मुझे बताइये, मैं कहाँ निवास करूं ? वाल्मीकि ऋषि जी मुस्कराये और बोले –प्रभु , पार ब्रह्म परमात्मा कहीं कहीं संत आपको कहते हैं।

शांताकारम् भुजगशयनम्,
पद्मनाभं सुरेशम्।

कहीं–कहीं संत आपको कहते हैं–

श्रीरामचंद्र कृपालु भजमन,
हरण भव भय दारूणम्।
नवकन्ज लोचन, कन्ज मुख,
कर कन्ज पद कंजारूणम्।।

प्रभु आप मुझे वो स्थान बताओ, जहाँ आप नहीं हो। आप तो सर्वज्ञ हो, आप सर्वत्र हो। आप प्राणी मात्र में स्थित हो। आप नर में हो, नारी में हो, आप नदी में हो, जल में हो, आप पहाड़ में हो, आप इन फल में हो। आप इन वस्तुओं में, सब में आप हो। आप कहाँ निवास करे, ये मुझसे पूछ रहे है, प्रभु ?

राम की केवल प्रेम प्यारा
जान लेई जो जानन हारा।

आप सब में बसे हुए हो प्रभु। प्रभु श्री राम की तरफ देखकर, वाल्मीकी जी मुस्करा कर बोलते है। जब खर–दुशण आये थे आपने लक्ष्मण जी को कहा था– लक्ष्मण तुम सीते के पास रहो। आपने लक्ष्मण को कहा था– लक्ष्मण तुम रहो। मैं अकेला ही इनका वध कर दुंगा। आप हजारों राम बन गये थे। सब में परमात्मा है जो अपने माता–पिता की सेवा करें। जिसका मन इस दर्पण के समान हो। जब भी दर्पण देखे, बार–बार सोचे– मैं अपने अन्दर ऐसे गुणों को पैदा करूंगा जिससे मैं गुणवान कहलाऊँ। प्रज्ञावान हो जाऊँ, सद्बुद्धिमान हो जाऊँ, समझदार हो जाऊँ। मैं पराये आँसूंओ को पौंछ सकूं। मैं लोगों के मरहम लगा सकू।

सम्पादकीय

सामाजिक सेवा मनुष्य का कर्तव्य है। सही में कहें तो यह ऋणमुक्ति का एक उपाय है। व्यक्ति जब जन्म लेता है तो वह माता–पिता से पालित होता है किन्तु उसके सीखने का क्रम समाज से ही विकसित होता है। यह ठीक है कि पहली गुरु माँ होती है पर समाज भी व्यक्ति के लिये प्रारंभिक पाठशाला ही है। समाज के सहयोग व सदाशयता से ही वह कई बातें, आदतें, व्यवहार सीखता है। उसका वातावरण, पर्यावरण उसे कई बातें सिखाता है। यह ज्ञान हरेक व्यक्ति पर समाज का ऋण है। इस ऋण से मुक्ति के लिये जब भी अवसर मिले तो व्यक्ति को प्रयास करना ही चाहिये। ऋण से मुक्त हुए बिना जीवन से भी मुक्ति संभव नहीं है। ऐसी दशा में समाज का ऋण भी व्यक्ति को उतारना ही चाहिये। सामाजिक ऋण से उऋण होने के लिये उसे अपने स्वभाव व रूचि के अनुसार सामाजिक सेवा का क्षेत्र चुनना चाहिये। वह शिक्षा, चिकित्सा, प्रेरणा अर्थ या कुछ भी हो सकता है।

कुछ काव्यमय

देव, पितृ व गुरु ऋण
सदियों से माने गये हैं।
पर सामाजिक ऋण के
विचार भी नहीं नये हैं।
इनसे मुक्त होकर ही
हम पूर्णता पा सकते हैं।
ईश्वर के चरणों में
उऋण होकर जा सकते हैं।

अपनों से अपनी बात

मृत्यु का विस्मरण

एक पेड़ पर दो बाज प्रेमपूर्वक रहते थे। दोनों शिकार की तलाश मे निकलते और जो भी हाथ लगता शाम को उसे मिल–बांटकर खाते। लम्बे काल खंड से यही क्रम चल रहा था। एक दिन दोनों शिकार कर लौटे तो एक की चोंच में चूहा और दूसरे की चोंच में सांप था। दोनों ही शिकार तब तक जीवित थे। पेड़ पर बैठकर बाजों ने जब उनकी पकड़ ढीली की सांप ने चूहे को देखा और चूहें ने सांप को। सांप चूहे का स्वादिश्ट भोजन पाने के लिए जीभ को लपलपाने लगा और चूहा सांप के प्रयत्नों को देखकर अपने शिकारी बाज के डैनों में

छिपने का उपक्रम करने लगा। उस दृश्य को देखकर एक बाज गम्भीर हो गया और विचारों में खो गया। दूसरे ने उससे पूछा–दोस्त, दार्शनिक की तरह किस चिन्तन में डूब गये ? पहले बाज ने अपने पकड़े हुए सांप की ओर संकेत करते हुए कहा देखते नहीं यह कैसा मूर्ख प्राणी है। जीभ की लिप्सा के आगे इसे मौत भी एक प्रकार से विस्मरण हो रही है। दूसरे बाज ने अपनी चोंच में फंसे चूहे की आलोचना करते हुए कहा– 'ओर इस नासमझ को भी देखो भय इसे प्रत्यक्ष मौत से भी डरावना लगता है।' पेड़ के नीचे एक मुसाफिर सुस्ता रहा था। उसने दोनों की बात सुनी और एक लम्बी सांस छोड़ते हुए बोला– हम मानव भी सांप और चूहे की तरह स्वाद और भय को बड़ा समझते हैं, मृत्यु तो हमें भी सदैव विस्मरण ही रहती है। जब कि वह अटल सत्य है।

– कैलाश 'मानव'

आदिवासी अंचल में सेवा की मुहिम

नारायण सेवा संस्थान ने 37 साल की परमार्थ सेवा यात्रा में गांव–गरीब, दीन–दिव्यांग, वंचित–विधवा एवं वृद्धों के लिए सेवा के अनवरत कार्य किए। सामाजिक संस्थाओं, दैनिक समाचार पत्रों व अन्य गेर सरकारी संगठनों के सर्वे देखते हैं तो लगता है कि अभी हम सबको समाज के वंचित, शोशित वर्ग एवं आदिवासी बच्चों, कुपोषित– महिलाओं और नशे के आदि लोगों के दृढ़ संकल्प के साथ ही बहुत कुछ करने की जरूरत है। कोरोना महामारी के दौरान संस्थान ने आदिवासी अंचल के लोगों की मदद पर विशेश ध्यान केन्द्रित किया। सहायता शिविरों के दौरान ज्ञात हुआ कि शहर से दूर दुर्गम–क्षेत्रों में टापरे में जिन्दगी जी रहे हमारे वनवासी भाई–बहन जागरूकता, शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार में अभी भी पिछड़े हैं। इन्हें जिन्दगी का हर

दिन गुजारने के लिए नाना प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे पीने का पानी, बीमारी में दवाई, बच्चों की पढ़ाई के लिए भटकना व नशे के आदि पुरूशों को सम्भालना ऐसी ही कुछ बड़ी समस्याएं हैं। इनके पास आमदानी का कोई स्थायी जरिया भी नहीं है। इसलिए आपके अपने संस्थान ने उदयपुर संभाग के आदिवासी क्षेत्र के गांवों–ढाणियों में भोजन, वस्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, साफ–सफाई और जागरूकता पहुंचाने की मुहिम शुरू की है। पिछले महीने 5 गांवों के करीब 3000 लोगों तक राहत पहुंचाने का प्रयास किया गया है। अभावग्रस्त आदिवासी बच्चों को नहलाने उनके नाखून–बाल कटवाने, मौसमी रोगों से पीड़ितो को दवाई व दांतों की सफाई के लिए प्रेरित किया गया। कुपोशित गर्भस्थ महिलाओं को पौष्टिक आहार दवाई और पहनने–ओढ़ने के कपड़े मुहैया करवाए जा रहे हैं। वृद्ध आदिवासी पुरूशों को नशा न करने की अपील के साथ मेडीकल, भोजन एवं सहायक उपकरण प्रदान किए जा रहे हैं। संस्थान परिवार को प्रसन्नता है कि आप जैसे करूणाशील दानदाताओं के पुनीत सहयोग से पीड़ित मानवता को मरहम लगाने का सेवा संकल्प हजारों लोगों के लिए कल्याणकारी बनने लगा है। आपका निरन्तर जुड़ाव एवं सहयोग मिलता रहे....इसी कामना के साथ.... सादर प्रणाम। **–'सेवक' प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

1968 में कैलाश ने अपनी दुकान में पार्टनरशिप कर ली। दो साल तक साथ में काम किया फिर कैलाश अलग हो गया। दुकान पार्टनर ने रख ली। अब उसके पास कुछ करने को था नहीं तो सरकारी नौकरी के लिये आवेदन कर दिया। बड़े भाई राधेश्याम ने भी स्पिनिंग मिल की नौकरी छोड़ एक निजी स्कूल में पढ़ाना शुरू कर दिया। राधेश्याम किशनगढ़ से कोन खरीद कर लाता तथा उन्हें चिपका–चिपकू, रंग रोगन कर वापस कड़क कर बड़ी बड़ी फैक्ट्रियों में बेच देता। कैलाश व उसका छोटा भाई जगदीश भी इस काम में मदद करने लगे और किशनगढ़ जाने लगे।

सभी भाइयों की दशा ठीक नहीं थी। राधेश्याम एक ही बुशर्ट बार–बार धोकर पहनता तो उसके छात्र कहते माड़साब को क्रीम कलर का बुशर्ट बहुत पसन्द है, इनका हर बुशर्ट इसी रंग का है। राधेश्याम यह सुनता तो उसके सीने में टीस सी उठ जाती। कैलाश इतने दिनों से बेकार था। उसे लगता कि भाई साहब की हालत ठीक नहीं है, उपर से वह उन पर भार बना हुआ है। यही विचार करते करते एक दिन कैलाश की रूलाई फूट पड़ी।

राधेश्याम को पता लगा तो उसने छोटे भाई को गले लगा लिया और कहा ऐसा सोचना भी मत कि तू मुझ पर भार है, एक रोटी भी मिली तो दोनों आधी आधी खा लेंगे। कैलाश को अपने भाई पर गर्व हो उठा। इसी बीच कैलाश की पत्नी कमला ने एक पुत्री को जन्म दिया। जिसका नाम गीता रखा गया। बाद में उसका नाम कल्पना कर दिया गया। कैलाश की प्रसन्नता का पारावार नहीं था। वह सबको कहता कि उसके घर लक्ष्मी आई है। शीघ्र ही इस लक्ष्मी ने अपना चमत्कार भी बता दिया और कैलाश के जीवन को अनपेक्षित खुशियों से भर दिया।

1971 की बात है कैलाश सदैव की तरह कोन लेने किशनगढ़ गया हुआ था। वहीं बड़े भाई राधेश्याम का फोन आया। कैलाश घबरा गया, भाई साहब को फोन करने की जरूरत क्यूं पड़ गई? ऐसी क्या बात हो गई, हजार तरह की आशंकाएं पल भर में उसके जेहन में आ गई। फोन फैक्ट्री में उसके नाम से पी.पी. आया था। उस वक्त वो वहां था नहीं, अब दूसरी बार वापस आने की प्रतीक्षा में ही वह फोन के पास बैठा था और विचारों की श्रृंखला में डूबता उतराता रहा था। पुनः फोन की घंटी बजी तो विद्युत की त्वरितता से उसने फोन उठाया। उधर से राधेश्याम की उत्तेजित आवाज आई, कैलाश तेरी पोस्ट ऑफिस में नौकरी लग गई है। कैलाश को सपने में भी अन्दाज नहीं था कि इस की खुश खबरी मिलेगी, वह तो किसी अनिष्ट की आशंका में ही लगा हुआ था इसलिये इस समाचार की अहमियत समझने में उसे एक क्षण लगा मगर इसके बाद उसके हर्ष का पारावार नहीं था।

अंश - 025

भावना जैसे बच्चों का जीवन सवारें

गोगुन्दा तहसील की अरावली पहाड़ियों की गोद में बसे नाथिया थल गांव की निवासी है भावना। जिसकी उम्र महज 7 वर्श है। करीब ढाई वर्श पहले लम्बी बीमारी से पिता चल बसे। माँ आदिवासी परम्परा के चलते भाई धीरा और वृद्ध दादा–दादी के पास छोड़ नाते चली गई। स्थिति ऐसी हुई कि इन मासूम भाई–बहन को खाने को रोटी और पहनने के कपड़ों के लाले पड़ गए। नाखून–बाल बढ़ गए, इन्हें न नहाने की सुध–न खाने को कुछ। टूटी–फूटी केलू की छत के नीचे रो–रोकर दिन काटने वाले ये बच्चे स्कूल की राह से भी अनजान हैं।

संस्थान को जैसे ही इनकी जानकारी मिली तो इनके गांव में अन्नदान–वस्त्रदान, शिक्षा, एवं चिकित्सा शिविर लगाने का निर्णय लिया। भावना को बूलाकर उसके नाखून–बाल काटे.... ब्रश करवाकर नहलाया, नए कपड़े–शूज पहनाकर बिस्किट दिए। वृद्ध दादा–दादी को खाने को राशन और मक्का भी दिया गया। ऐसे ही कई निर्धन परिवार शिविर में आए जिन्हें सहायता दी गई। बच्चे अपनत्व पाकर खिलखिला उठे।

बच्चों का खानपान सुधारें

खान–पान को लेकर बच्चों के पास अपनी एक सूची होती है जिसमें उनकी पसंद–नापसंद का ब्योरा होता है। बचपन की ये जिद्द बाद में उनकी आदत में शुमार हो जाती है और फिर वे हमेशा ही नापसंद चीजों से दूर रहते हैं। इसके लिए कुछ तरीके अपनाकर और छोटी–छोटी बातों का ध्यान रख आप उनकी इन आदतों में तब्दीली ला सकते हैं।

न हो कुछ अलग

बच्चे यदि भोजन के मामले में बदले नखरे करते है और गिनी–चुनी चीजें ही खाते हैं तो उनके लिए कुछ अलग न बनाएं। कुछ अलग बनाकर हर बार परोसते रहेंगे तो उन्हें इसकी आदत हो जाएगी।

पकाने में मदद

लड़का हो या लड़की, दोनों को खाना पकाने की प्रक्रिया में शामिल करें। इससे उन्हें इस बात का भान रहेगा कि जिसे में पलभर में नकार देते हैं वह कितनी मेहनत का कार्य है।

करें नया प्रयोग

यदि बच्चे किसी व्यंजन को लेकर नखरे करते हैं तो नकारात्मक प्रतिक्रिया न दें। डांटना और जबरदस्ती खिलाना हल नहीं। व्यंजन को लेकर नया एक्सपेरिमेंट कर सकते हैं।

भोजन एक साथ

इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि घर में खाना सभी के लिए एक जैसा बनें। जो बना है वही सबको खाना है वह भी साथ बैठकर। किसी के लिए अलग से व्यंजन न बनाएं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

सचिवालय वहाँ के चीफ सेक्रेटरी साहब उस समय मीठालाल जी मेहता मुख्य सेक्रेटरी, तो मैं उनके पी.एस. के पास गया था, क्योंकि उनसे मिलने का समय लेना था। मुझको देखकर आश्चर्य चकित हो गये। कैलाश जी आश्चर्य है कि आप इतना कार्य कर रहे हो? नारायण सेवा इतना कार्य कर रही है, हर दिन कर रही है या तो ये झूठ है या ये सत्य है, मेरे लिये बहुत आश्चर्य है।

मैंने कहा झूठ तो नहीं है। आपको कैसे मालूम पड़ा काम का? बोले– आपकी संदीपन आती है मेरे पास। मुख्य सचिव को भेजते हो, वो मेरे पास आती है, तो पहले मेरे पास ही आती है डाक, मैं उसको पढ़ता हूँ। पौष्टिक आहार वितरण हो रहा है, कपड़े वितरण हो रहे हैं, डॉक्टर साहब उपचार कर रहे हैं। नशा निवारण का काम भगवान करवा रहे हैं। मैंने कहा साहब मैं तो छोटा सा आदमी हूँ और मेरे सारे साथी साधारण है। कोई असाधारण नहीं है, असाधारण तो कभी–कभी पधार जाते हैं, जैसे कलक्टर साहब पधारे। क्या वर्णन करना है? ये इतिहास की धरोहर है। नारायण सेवा भूखे को भोजन, बीमार को दवा, निर्धन को कपड़ा यही है नारायण सेवा। ये भावक्रान्ति की नारायण सेवा है।

भाव हमारे अच्छे हैं तो,
बरकत हमारी दासी है,
कर्म हमारे अच्छे हैं तो,
घर में मथुरा काशी है।

जब कक्ष बनने लगे नारायण सेवा संस्थान के, जिनका विस्तृत वर्णन आगे की पंक्तियों में मिलेगा आपको, तो उस समय प्रकृति ने ब्रह्माण्ड ने, शंकर भगवान ने, राम भगवान ने दक्षिण अफ्रीका से एक रसिक भाई को भेजा। उन्होंने कहा कैलाश जी आपका काम बहुत अच्छा है।

रसिक भाई ने कहा मैं एक छोटा–मोटा हॉस्पिटल पूरा बनवाना चाहता हूँ, उन्होंने आज से बीस साल पहले एक बड़ा दान दिया, रसिक भाई का हॉस्पिटल बना प्राकृतिक चिकित्सालय। बन्धु ये भगवान ने भेजा, कोई कह दे कैलाश जी ने बुलाया। नहीं भाई नहीं, मैं तो एक साधारण आदमी हूँ।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 378 (कैलाश 'मानव')

श्री गणेशाय नमः

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

दिव्यांग एवं निर्धन कन्याओं के बनें धर्म माता-पिता

पूर्ण कन्यादान (प्रति कन्या)
₹ 51,000

आंशिक कन्यादान (प्रति कन्या)
₹ 21,000

पाणिग्रहण संस्कार (प्रति जोड़ा)
₹ 10,000

मेहंदी रस्म (प्रति जोड़ा)
₹ 2,100

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe paytm
narayanseva@sbi

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालयः 483, 'सेवाधाम' सेवा नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313002, भारत

+91 294 662 2222, 266 6666 | +91 7023509999

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023